आधुनिक बाजारवाद के दौर में गाँधीजी के 'स्वदेशी' विचार की प्रासंगिकताः

शशि ललन यादव
शोध छात्र, इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला वि0वि0 कामेश्वरनगर, दरभंगा
ईमेल – lalanshahi1@gmail.com
मो0 – 8521153644

सारांश

सर्वविदित है कि वर्तमान समय में संपूर्ण विष्व विभिन्न संकटों से जूझ रहा है। विभिन्न देषों के आपसी संबंधों में दरार के कारण 'आत्मनिर्भर' एक प्रमुख वैष्विक विषय बन चुका है। गौरतलब है कि गाँधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही 'स्वदेषी' का आह्वान किया था। आज दुनिया के कई देष आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। ऐसी स्थिति में गाँधीजी को 'स्वदेषी' अवधारणा या विचार अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। गाँधीवादी स्वदेषी अवधारणा वर्तमान समय में भी उतना ही अधिक प्रासंगिक है, जितना गाँधी के युग में था। भारत की वर्तमान सरकार भी गाँधी के युग में था। भारत की वर्तमान सरकार भी गाँधी जी की इस स्वदेषी विचार का अनुकरण करते हुए नवभारत की संकल्पना को पूरा करने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' और 'लोकल फौर वोकल' का नारा दिया। जिसके तहत देष के विभिन्न रक्षा एवं स्वास्थ्य उपकरण का न सिर्फ अपनी आवष्यकताओं के लिए उत्पादन किया गया बल्कि दूसरों देषों को निर्यात कर; देष को आर्थिक रूप से शक्तिषाली बनाने का भी निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इससे न सिर्फ भारत के पारंपरिक स्थानीय उद्योगों को पुर्न जिवित किया जा सकता है, बल्कि रोजगार के कई नए अवसर भी सृजित होंगे।

मुख्य शब्द : गाँधीजी, स्वदेषी, आत्मनिर्भर, प्रासंगिक, स्थानीय।

प्रस्तावना

25 मई सन् 1915 को महात्मा गांधी जी ने 'कोचराव' में सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की, जिसे बाद में साबरमती स्थानांतरित कर दिया गया। गांधी जी ने आश्रम की स्थापना के समय समाज की सेवा का महाव्रत लिया। इस हेतु गांधी जी ने 11 महाव्रतों (एकादष व्रत) के पालन की बात कही, जिससे आश्रम के सदस्य स्वयं को समाजसेवा, देष सेवा एवं विष्व कल्याण के योग्य बनाने में निरंतर एवं अनवरत प्रयत्न कर सकें। गांधी जी के एकादष व्रत थे– सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, श्रम स्वदेषी, निर्भीकता, अस्पृष्यता निवारण एवं सहनषीलता।

जहाँ तक महात्मा गांधी के एकादष व्रत में 'स्वदेषी' का प्रष्न है तो इस संदर्भ में गांधीजी का मानना था कि मनुष्य सभी कार्यों को स्वयं करने में सक्षम नहीं है, इसलिए उसे सर्वप्रथम अपने आसपास के लोगों को प्राथमिकता देते हुए पड़ोसी की सेवा एवं सहायता करनी चाहिए, यही स्वदेषी है, इसी के माध्यम से व्यक्ति विष्व सेवा कर, विष्व कल्याण में अपना योगदान दे सकता है।' जहां तक संभव हो मनुष्य को स्थानीय वस्तुओं से अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए, स्वदेषी का यह मार्ग हमें स्वाबलंबन एवं आत्मनिर्भर बनाता है।

''पॉवर्टी एंड अनब्रिटिष रूल इन इंडिया – दादा भाई नौरोजी तथा ''द इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया अण्डर अर्ली ब्रिटिष रूल– आर0सी0दत्त में भारतीय अर्थव्यवस्था की भयंकर दुर्दषा तथा अंग्रेजों की शोषणकारी नीति की जो रूपरेखा प्रस्तुत की, उसने स्वदेषी का आधार निर्मित किया तथा आगे चलकर महात्मा गांधी जी क नेतृत्व में स्वदेषी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख आधार बना, उसमें खादी एवं चरखे को विषेष महत्व दिया गया। सन् 1920 में स्वदेषी आन्दोलन में खादी को राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में प्रयोग करना शुरू किया गया जो कालांतर में 'भारत की

स्वाबलंबता एवं आत्मनिर्भरता' का शाष्वत प्रतीक बन गया। साथ ही यह ब्रिटीष परिधान के विरोध का भी प्रतीक बना।

गंधीजी मानते थे कि स्वदेषी व खादी ही ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का पुर्नउत्थान किया जा सकता है बल्कि भारतीय सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समानता को एक रूप में ढ़ाला जा सकता है तथा इसके माध्यम से भारतीयों में रोजगार भी सृजित किया जा सकता है।

गांधी जी ने कहा था 'भारत की आत्मा गांवों में बसती है। जिसके कारण उन्होंने गांवों के विकास एवं समृद्धता को प्रधानता दी और ग्रामीण आत्मनिर्भरता महत्व को बताते हुए स्वराज, ग्रामोंद्योग और महिलाओं की षिक्षा पर विषेष बल दिया जिससे एक सषक्त, स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो सके। इसी उद्देष्य से सन् 1956 में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग' (केवीआईसी) की स्थापना की गई। इसके अतिरिक्त 73वें संविधान संषोधन अधिनियम के तहत 'स्वायत्त पंचायती राज व्यवस्था' की स्थापना की गयी जिसके माध्यम से गांधी के ग्राम स्वराज की संकल्पना, 'खादी, ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग' को संविधान की 11वीं अनुसूची की 'नवीं प्रविष्टि' में शामिल करते हुए खादी की महता व उसकी प्रासंगिकता को स्वीकार किया गया। निःसंदेह गाँधीजी का यह विचार हमें ग्रामस्वराज एवं आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसर करता है।

वर्तमान प्रासंगिकता

देष के वर्तमान यषस्वी प्रधानमंत्री जी के द्वारा नवभारत एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को पूर्ण करने के लिए 'स्वदेषी' (वोकल फॉर लोकल) पर विषेष बल दिया गया। उन्होंने देष के प्रत्येक व्यक्तियों से अधिक से अधिक स्थानीय उत्पादों के भरपूर उपभोग करने का आह्वाहन किया, जिससे हस्तकरघा लघु

एवं स्थानीय उद्योगों को पुर्नजीवित कर गाँधी जी के 'स्वदेषी' सपनों को साकार किया जा सके। हाल ही में 'राष्ट्रीय हथकरघा निवेष दिवस' के मौके पर देष के ऊर्जावान प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में कहा था – 'हथकरघे उद्योग में मुख्य रूप से प्राकृतिक रेषों, रंगों और जैविक उत्पादों का प्रयोग किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए लाभकारी है।' साथ ही उन्होंने देष के लोगों से अपील किया कि – 'जब आप स्थानीय उत्पाद खरीदते हैं, तो इससे देष के एक घर में समृद्धि आएगी।

वर्तमान समय में कोरोना महामारी तथा चीन जैसे देषों से बिगड़ते रिष्तों ने गाँधीजी के 'स्वदेषी' विचार को काफी अधिक प्रासंगिक बना दिया है। पूर्ण आत्मनिर्भरता; वर्तमान बाजारवाद के दौर में कदाचित संभव नहीं है, किन्तु स्थानीय वस्तुओं के अधिकतम उपभोग से वैष्विक निर्भरता को कुछ कम अवष्य किया जा सकता है। इस दौरान (हाल ही के वर्षों में) देष की सरकार ने स्वावलम्बी और 'आत्मनिर्भर भारत' बनाने के लिए 'वोकल फॉर लोकल' (स्वदेषी) या 'मेड इन इंडिया' का नारा दिया। इससे न केवल देष की अर्थव्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी, बल्कि रोजगार के नए अवसर सृजित भी होंगे। ऐसे में गाँधीजी के 'स्वदेषी' विचार को अपनाकर ही एक समृद्ध भारत की परिकल्पना और निर्माण संभव है।

चुनौतियाँ

आधुनिक बाजारवाद के दौर में स्वदेषी उत्पादों को निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है –

1. ब्रांडिंग की समस्या
2. बाजार की अनुपलब्धता
3. निवेष की अभाव
4. दुनिया की बड़ी एवं बहुचर्चित कंपनियों से संघर्ष या प्रतिस्पर्धा स–समय श्रमिकों की उपलब्धता इत्यादि।

यदि सरकार या शासन के द्वारा इन समस्याओं का समाधान कर दिया जाए तो गाँधी जी के स्वाबलंबी एवं स्वदेषी विचारों की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

संभावनाएँ

इससे हमारी पारंपरिक लघु एवं हथकरघा उद्योगों के पुर्नजीवित होने की संभावनाएँ है, जो हमारी संस्कृति की भी पहचान हैं 'स्वदेषी' को अपनाकर न केवल देष की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ एवं समृद्ध होने की प्रबल संभावनाएँ हैं, बल्कि रोजगार के कई नए अवसर सृजित होने की भी गहरी संभावनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त, किसी अन्य देषों पर अपनी निर्भरता कम कर; आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनने की भी अत्यधिक संभावनाएँ हैं।

निष्कर्ष

किसी भी देष को आर्थिक रूप से संपन्न बनाने में 'स्वदेषी' का विषेष योगदान होता है। आधुनिक बाजारवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, वैष्विक महामारी विभिन्न देषों के आपसी टकराव के दौर में गाँधीजी के 'स्वदेषी' अवधारणा को अपनाना अनिवार्य हो गया है। देष की वर्तमान सरकार भी 'मेक इन इंडिया' और 'लोकल फॉर वोकल' को निरंतर बढ़ावा दे रही है। आधुनिकता के दौर में पूर्ण आत्मनिर्भरता कदाचित संभव नहीं है, किन्तु स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित एवं इसका अधिकतम उपयोग निःसंदेह दूसरे देषों पर हमारी निर्भरता को बहुत हद तक कम करने में अवष्य सहायक सिद्ध हो सकती है। देष की वर्तमान सरकार विभिन्न स्थानीय उत्पादों को टैगिंक कर; ब्रांडिंग कर रही है, ताकि भारत के स्थानीय प्रसिद्ध उत्पादों की अंतर्राष्ट्रीय पहचान स्थापित हो सके। 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत न सिर्फ रक्षा उपकरण, बल्कि

स्वास्थ्य एवं अन्य जरूरी उत्पादों का वृहत पैमाने पर उत्पादन किया जा रहा है। भारत सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत' को जमीनी स्तर पर लागू करने एवं इसे सफल बनाने के लिए काफी व्यापक आर्थिक रणनीति बनाई है। 'स्वदेषी' ही हमें 'आत्मनिर्भर' एवं स्वावलंबी बनाता है। इन प्रयासों से न केवल देष में आर्थिक संपन्नता आएगी, बल्कि रोजगार के कई नए एवं स्थानीय अवसर भी सृजित होगें।

हालांकि 'स्वदेषी' के समक्ष ब्रांडिंग एवं बाजार की अनुपलब्धता जैसी कुछ समस्याएँ एवं चुनौतियाँ अवष्य है, जिसे वर्तमान समय में दूर करने का केन्द्र सरकार के द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार गाँधीजी के 'स्वदेषी' विचार को अपनाकर ही आज भारत आर्थिक रूप से संपन्न राष्ट्र की कल्पना कर सकता हैं। अतः ऐसी परिस्थिति में गाँधीजी के 'स्वदेषी' अवधारणा की प्रासंगिकता वर्तमान समय में स्पष्ट समझी जा सकती है।

संदर्भ

1. मोहनदास करमचंद गाँधी, ऑटोबायोग्राफी ऑफ द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेन्ट विथ टुथ, नवजीवन पब्लिकेषन हाउस, अहमदाबाद।
2. ग्रामोदय संकल्प, भारत सरकार, अक्टूबर 2018, अंक 2 एवं जनवरी 2019, अंक 5।
3. ऋषभ कृष्ण सक्सेना, खादी में रोजगार की संभावनाएँ, कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2015, अंक 12।
4. Dr. S.K. Joshi, Time for a new Paradigm of Swadeshi, The Times of India, 2020
5. Gita Dharmpal, Covid asks us to head Gandhian Principles of Swadeshi and Sarvodaya, 2020